

आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 22 February 2022

Website: www.shivbabas.org

*धारणा - अब स्मृति स्वरूप बन सोये हुए शक्तियों को जगा कर
समर्थ स्वरूप बनना है*

स्वयं भगवान ने परम सदगुरू बनकर हम सभी को राजयोग सिखाया। ज़रा अपने भाग्य को देखकर आनन्दित हो जाये। स्वयं भगवान हमें पढ़ाने आये। और उन्होंने योग की गुह्य से गुह्य विद्या हमें प्रदान कर दी।

उसमें एक बात है। कि उसने हमारे सोई हुई शक्तियों को जगा दिया। हमारे सोये हुए पवित्र संस्कारों को जागृत किया। हमें एहसास कराया.....

" तुम बहुत शक्तिशाली हो .. तुम परम पवित्र हो .. तुम इस धरा की महान आत्मायें हो "

हम तो विस्मृति की नींद में सोये हुए थे। बाबा ने आकर हमें जगा दिया है। सभी आत्मायें पूरी तरह से जग चुके हैं।

तो रोज सवेरे उठकर उठने के बाद फिर से स्वयं को जगाना है। अच्छी तरह से जगाना है। अपने सोई हुई शक्तियों को आवाज़ देना है

" उठो" "

अपने पवित्रता का आह्वान करना है

" आ जाओ मेरे पास "

यह महान कार्य रोज सवेरे हमें करना है। तो उठने के बाद ही बाबा को गुड मॉर्निंग करके अपने को अनेक स्वमानों की याद दिलाये।

यह स्वमान अपने सोई हुई चेतना को जगाने वाले है। यही हमें महान बनाने वाले है। हमें तो यह सोचने की आवश्यकता नहीं की बाबा तो केवल यह कहते है कि

" मुझे याद करो, बाकी चीज़ो की क्या बात है? क्या जरूरत है? "

लेकिन योग से हमारे विकर्म विनाश होंगे। स्वमान से हम सर्वगुण सम्पन्न और शक्तिशाली बन जायेंगे।

अकेले योग करने से हमें अच्छे अनुभव तो होंगे परन्तु वैराइटी एक्सपेरियन्स हमें नहीं होंगे। जब कि हमें आवश्यकता है हम अलग अलग तरह कि अनुभव प्राप्त करे।

अपने देव स्वरूप को याद करेंगे तो देवत्व की फीलिंग होगी। बहुत आनन्द होगा। हमें मेहसूस होगा हमारी सुखों के दिन आ रहे है।

हम कैसे थे? हम हीरों एक्टर्स थे। इसका हमें बहुत ही स्पष्ट आभास होने लगेगा।

अपने पुज्य स्वरूप को याद करने से हमें आभास होगा कि

जिन देवी देवताओं की हम पूजा करते है, वह तो हम ही है .. हमारा क्या स्वरूप है ! ... हमारे चेहरे पर कितना दिव्यता, कितना तेज, कितनी शान्ति, और कितनी पवित्रता है !

और हमें मेहसूस होगा

" यह मैं ही हूँ "

यह नशा चढ़ता जायेगा। इसे ही लोगो ने सो अहम् , तत् त्वम् , ऐसे मन्त्रों के रूप में भक्ति में याद किया।

लेकिन गलती यह कर बैठी ... स्वयं को भगवान मान बैठे। उसका स्वरूप मान बैठे। यह नहीं की

हम देवता थे, हम पुनः देवता बन रहे है

" हम सो सो अहम् " ... यह इसका ही अर्थ है।

तो हम अपने को रोज जगाया करे। अपने महानताओं की स्वयं को स्मृति दिलाया करे। अपनी शक्तियों की स्वयं को स्मृति दिलाया करे। ताकि हमें यह आभास रहे कि

" यह शक्तिशाली मैं हूँ .. यह समस्यायें और परिस्थितियाँ शक्तिशाली नहीं है .. बड़े हम है .. बाकी तो यह सभी बातें तो बहुत छोटी है "

तो आज सारा दिन हम स्वयं को जगा कर रखेंगे। विस्मृति की नींद में सोने नहीं देंगे। और याद रखेंगे....

" हमारा यह चुराशी जन्मों का खेल पूरा हुआ .. स्वयं भगवान आये है हमें घर ले जाने के लिए .. मुझे सबकुछ छोड़कर अब घर वापिस चलना है "

तो अभ्यास करेंगे

इस देह को छोड़कर मैं आत्मा उड़ चली अपने धाम की ओर .. धीरे-धीरे मैं उड़ती जा रही हूँ .. पहुँच गई परमधाम .. यह मेरा घर है .. यहाँ सम्पूर्ण चैन है .. विश्राम है .. यहाँ सम्पूर्ण सुख और शान्ति है "

थोड़ी देर यहाँ स्थित होंगे। फिर मेहसूस करेंगे

" यहाँ से निकलकर मैं आत्मा नीचे उतर रही हूँ "

और आ गई अपने देह में भ्रुकुटी की कुटिया में

यह जाने और आने का अभ्यास करते रहेंगे।

॥ ओम शान्ति ॥